जैसे परमेश्वर अपने इनाम देता है — और किन मापदंडों के
अनुसार (भाग 4)

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के पवित्र नाम में आपका हार्दिक स्वागत है। मुझे प्रसन्नता है कि हम फिर से परमेश्वर के वचन में साथ मिलकर प्रवेश कर रहे हैं। हमारी अध्ययन‑श्रृंखला — परमेश्वर के इनामों और उनके द्वारा निर्धारित मापदंडों के संबंध में — आज भाग 4 के साथ आगे बढ़ती है।

4) जो गरीबों और ज़रूरतमंदों की मदद करते हैं, उनके लिए इनाम है

यीशु ने एक फरीसी के घर भोजन के समय उस से यह शिक्षा दी, जिसने उन्हें आमंत्रित किया था:

“तुम जब दिन का या रात का भोज दोगे, तो न अपने मित्रों को, न भाइयों को, न अपने सम्बंधियों को, न धनी पड़ोसियों को बुलाओ; कहीं ऐसा न हो कि वे भी तुम्हें बुलाएँ, और तुम्हें बदले में कुछ मिल जाए। बल्कि जब तुम भोज दोगे, तो गरीबों, मूँहझूड़ों, लँगड़ों और अँधों को बुलाओ; तब तुम धन्य होगे, क्योंकि उनके
पास तुम्हें लौटाने को कुछ नहीं है; पर जब धर्मियों के पुनरुत्थान का समय आयेगा, तब तुम्हें इसका प्रतिफल मिलेगा।”

“और उसके साथ भोजन कर रहे एक ने यह सुनकर उससे कहा — धन्य है वह, जो परमेश्वर के राज्य में भोजन करेगा!”

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

जैसे परमेश्वर अपने इनाम देता है — और किन मापदंडों के
अनुसार (भाग 4)

अगर तुम — एक विश्वासयोग्य व्यक्ति के रूप में — उद्धार में खड़े हो, तो यह मत भूलो: तुम्हें बुलाया गया है कि तुम ज़रूरतमंदों का ख्याल रखो। परमेश्वर ने तुम्हें जिन चीज़ों में आशीषित किया है, उन्हें काम में लाओ — ताकि तुम गरीबों और असहायों के साथ खड़े हो सको। क्यों? क्योंकि स्वर्ग में महान इनाम उन लोगों के लिए तैयार है, जो गरीबों को याद रखते हैं — विशेष रूप से उस दिन जब प्रभु अपने चुनिंदा लोगों को पुनरुत्थित करेगा और उन्हें उनका अनन्त पुरस्कार देगा।

जब तुम दान करो या भोज का आयोजन करो, तो न केवल उन लोगों को बुलाओ या सहायता करो जो तुम्हें बदले में कुछ दे सकते हैं। जानबूझकर उन लोगों को आमंत्रित करो या उनका साथ दो, जो तुम्हें कुछ भी लौटाने की स्थिति में नहीं हैं। तुम्हारी उदारता सिर्फ उन तक सीमित न हो जो तुम्हारी मदद कर चुके हैं — बल्कि वही विशेष रूप है जो उनके लिए हो, जो तुम्हारे समान नहीं हैं। इस तरह तुम स्वर्ग में वास्तविक खजाना जमा करते हो।

प्रेरित पौलुस ने इस सिद्धांत को अपने जीवन में अपनाया था। उन्होंने लिखा:

“केवल इतना कहा गया कि हम गरीबों का याद रखें — और इस काम
में मैं निरन्तर लगा रहा हूँ।”

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

जैसे परमेश्वर अपने इनाम देता है — और किन मापदंडों के
अनुसार (भाग 4)

क्या तुम समझते हो? जब हम उन लोगों को देखते हैं जो ज़रूरत में हैं — गरीबों को, अनाथों को, जिनके पास मदद का पहुँच नहीं है — तो हमारे पास स्वर्ग में महान इनाम अर्जित करने का अवसर रहता है। आइए हम सुस्त न हों, बल्कि पूरी शक्ति से उनकी मदद करें।

स्वर्ग में हमारा धन इस बात पर नहीं मापा जाएगा कि हमारी धरती पर कितनी संपत्ति थी — बल्कि इस बात पर कि हमने उस धन का किस प्रकार उपयोग किया: विशेष रूप से उन उदार कार्यों द्वारा। यदि हम सब कुछ केवल अपने लिए इस्तेमाल करें, या केवल उन लोगों के साथ बाँटें जो बिल्कुल हमारे जैसे हैं, तो हम अपनी अनंत इनाम को कम कर लेते हैं।

दान देने का अर्थ यह नहीं है कि तुम धनी होना चाहिए। अगर तुम्हारे पास बहुत कम है — मान लीजिए 100 शिलिंग — तो तुम उसमें से 50 किसी ज़रूरतमंद की मदद के लिए दे सकते हो, और फिर भी तुम्हारे पास पर्याप्त रह सकता है। अहम बात दान की मात्रा नहीं है, बल्कि उसके पीछे का हृदय है — यही परमेश्वर देखता है।

प्रभु हमें यह समझने में मदद करे — और आज से हम शुरुआत करें कि हम ज़रूरतमंदों को अनदेखा न करें, बल्कि सक्रिय रूप से उनका साथ दें।

जैसे परमेश्वर अपने इनाम देता है — और किन मापदंडों के अनुसार (भाग 4)

परमेश्वर आपको आशीषित करे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp